शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-२ अंक-५

माह : नवम्बर २०१६

बाल दिवस विशेषांक

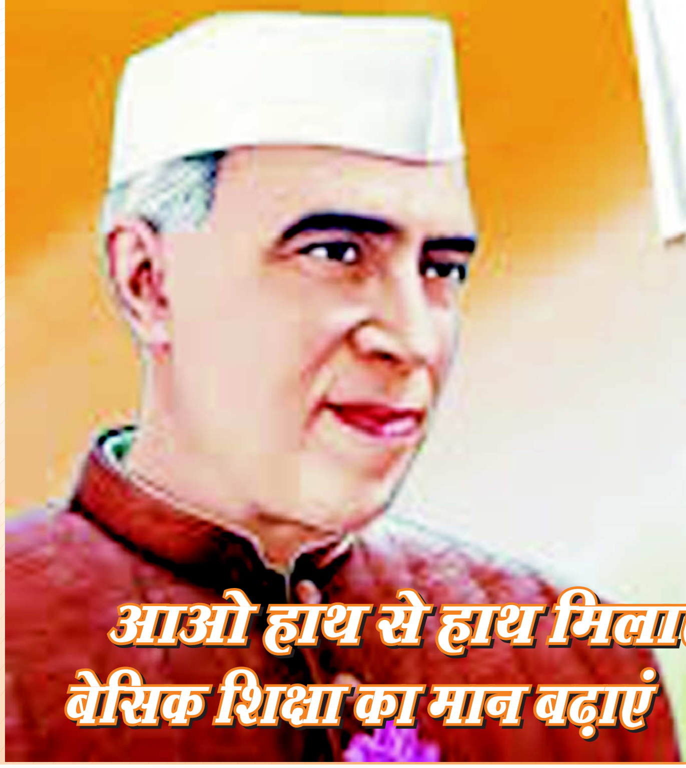

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन
शिक्षण
संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-५

माह- नवम्बर २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

प्रवीण तिवारी -प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज

शिक्षा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। बिन शिक्षा जीवन अधूरेपन के सिवा कुछ भी नहीं है। यह शिक्षा ही है जो हर बच्चे में कुछ न कुछ नया करने व सभ्य समाज के निर्माण के बीज बोती है। परिषदीय विद्यालयों में आने वाले अधिकांश बच्चों के अभिभावक अशिक्षित हैं। ऐसे में उन्हें शिक्षा के महत्त्व को समझाना व बच्चों को नियमित रूप से भेजने के लिए तैयार करना नितांत दुष्कर कार्य है। साथ ही आज के अध्यापक के लिए निजी विद्यालयों से प्रतियोगिता में भी स्वयं को सिद्ध करने की चुनौती है। इसलिए परम्परागत तरीकों से काम नहीं चलने वाला। खैर जहाँ चाह वहाँ राह की तर्ज पर मिशन शिक्षण संवाद के रूप में आशा की एक किरण दिखायी पड़ती है जहाँ रचनात्मकता का विशाल वातावरण शिक्षकों में लगातार ऊर्जा भरने का कार्य करता है। इस मंच के माध्यम से विभिन्न जनपदों के हजारों शिक्षक एक–दूसरे से लगातार सीख रहे हैं और उनसे जुड़े लाखों छात्र–छात्राएँ शिक्षण की नवीन पद्धतियों और युक्तियों से लाभान्वित हो रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की सूची में प्रतिमाह पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत सराहनीय कदम है। यह एक ऐसी पत्रिका है जो परिषदीय शिक्षकों के कार्यों व उपलब्धियों से भरी हुई है। मैं ऐसे रचनात्मक कार्य के लिए मिशन शिक्षण संवाद की पूरी वर्किंग टीम को बहुत–बहुत शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

Prof

प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
प्रयागराज

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

"परिवर्तन" शब्द जब भी सामने आता है सबसे पहले अनेकों नकारात्मक भाव भय दिखाने के लिए सामने आ जाते हैं। यह तो असम्भव है इसमें यह परेशानी, वह समस्या है इतना कठिन कार्य कैसे होगा, कौन करेगा? अनेकानेक प्रश्न जाल बनकर "परिवर्तन" शब्द को असम्भव की सूची में शामिल करा देते हैं। लेकिन जब हम शून्य के करीब जाते हैं, उससे समझने और सीखने के जितने प्रयास करते हैं इस जगत में कुछ भी न तो असम्भव नजर आता है और न ही "परिवर्तन" शब्द असम्भव की सूची में शामिल नजर आता है। सब कुछ सहज, सरल और सम्भव नजर आता है बस जरूरत है शून्य से मिलकर, शून्य से प्रेम करके, शून्य बनने तक धैर्य की और शून्य की अनन्त शक्ति पर विश्वास करने की। जैसे ही हम शून्य की संगत से शून्यवत होते हैं हमें ज्ञान होता है अपने महत्व का, अपने स्थान का, विविधता के साथ रहने का और परिवर्तन के किसी भी असम्भव और दुर्गम दिखाई देने वाले पथ पर बिना किसी भय और भेद के चलने का। यही तो असम्भव को सम्भव बनाने वाली वह जादुई शक्ति है जो हमें कुछ खोने और होने के अहंकार से दूर करती है। शून्य अकेले भले ही अस्तित्वहीन नजर आता हो, लेकिन यदि वह किसी एक के साथ मिल जाता है तो वही शून्य सहस्त्र का स्थान प्राप्त कर लेता है।

ठीक ऐसे ही एक अकेला मिशन शिक्षण संवाद शब्द भले ही शून्य है। लेकिन जब इस शून्य को आप सब जैसे एक– एक इकाई का साथ और सहयोग मिलता है तो यह सहस्त्र कदम परिवर्तन के सकारात्मक पथ पर आगे बढ़ कर शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान की एक उम्मीद बन जाता है।

इसी उम्मीद, उद्देश्य और लक्ष्य के लिए आप सभी से आशा एवं विश्वास है कि हम सब एक अकेले भले ही शून्य और इकाई हों, लेकिन आपसी सीखने–सिखाने के लिए "शिक्षण संवाद" के पिछले अंकों की भाँति इस अंक से भी आप कुछ ज्ञान प्राप्त करेंगे, कुछ हम सभी का सुझाव और समीक्षा के रूप में मार्गदर्शन करेंगे। जिससे असम्भव नाम के भ्रमित भय से मुक्त होते हुए शिक्षा के उत्थान एवं शिक्षक के सम्मान के पथ को सरल, सहज एवं सुलभ करते हुए आने वाली भावी पीढ़ियों को प्रेरित कर, उनका पथप्रदर्शन करेंगे।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	1
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	3–4
मिशन गीत	5
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	6–8
निन्दक नियरे राखिए	9–10
टी.एल.एम.संसार	11
शिक्षण गतिविधि	12–13
माह नवम्बर की गतिविधि	14
इंग्लिश मीडियम डायरी	15–16
प्रेरक–प्रसंग	17
सद्विचार	18
बाल फिल्म–केशु	19
बच्चों का कोना	20
बाल कहानी	21
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	22
बात महिला शिक्षकों की	23
योग विशेष	24
खेल विशेष	25–26

आचरण

शिक्षण संवाद

सरल भाषा में आचरण का अर्थ समझा जाए तो चरित्र, व्यवहार से है। आचरण को अगर इंसान की दृष्टि से देखा जाए तो उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है और अच्छा आचरण इंसान को जीवन में कई ऊँचाइयों तक पहुँचाता है जिसकी किसी ने कोई कल्पना नहीं की है। आइए मित्रों कुमार जितेन्द्र के साथ आचरण को भली–भाँति एक अच्छे विश्लेषण के साथ समझते हैं।

पौराणिक काल में प्राचीन समय में प्रत्येक इंसान में आचरण को आसानी से देख और परख सकते थे। स्त्री के गर्भ में पल रहे शिशु से लेकर अंतिम समय तक इंसान के प्रत्येक क्षण में आचरण का परिणाम नजर आता था। पौराणिक काल में संयुक्त परिवार में माता – पिता, दादा – दादी, चाचा – चाची, नाना – नानी के संस्कारों से बालक के व्यक्तित्व का विकास तीव्र गति से होता है तथा उनका प्रभाव लंबे समय तक देखने को मिलता था। बालक उनके आचरण से अपने जीवन में अच्छी मंजिल को प्राप्त कर सकता था। पौराणिक काल में प्रत्येक इंसान में अच्छे व्यवहार से आपसी भाईचारे की भावना, अपनत्व देखने को मिल जाता था तथा इंसान के अच्छे आचरण से एक पीढ़ी की पहचान कई पीढ़ियों तक उनके गुणों का गुणगान किया जाता था। हमने अपने आसपास बड़े – बुजुर्गों या पत्र – पत्रिकाओं में कई अच्छी कहानियों को पढ़ा या सुनने को मिला है। जिसमें इंसान के आचरण से व्यक्तित्व के मूल्यांकन को परिभाषित किया गया है।

वर्तमान में आचरण का प्रभाव – वर्तमान समय में इंसान ने आचरण की परिभाषा ही बदल डाली है। इंसान ने आधुनिकता और प्रतिस्पर्धा के चक्कर में आचरण को दरकिनार कर दिया है। वर्तमान के इंसान में स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, अहं और विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन जैसे अवगुण भरे पड़े हैं। जिससे उसका आचरण दिनोंदिन बिगड़ता जा रहा है। ये बुरे अवगुण आचरण को बहुत प्रभावित कर रहे हैं। जिससे इंसान आचरण के पथ से भटक रहा है। वर्तमान में हमने बहुत सी घटनाएँ देखने और सुनने को मिल रही है, जो उनके आचरण को बताती हैं। जिसमें प्रमुख रूप से प्रतिदिन बढ़ रहे संयुक्त परिवार से एकल परिवार बड़ा चिंतनीय विषय है। बढ़ते एकल परिवार तथा परिवार में दिनोंदिन नकारात्मक घटनाएँ बालकों के व्यवहार को बहुत प्रभावित कर रहे हैं। जिसमें प्रायः बालकों में चिड़चिड़ापन, मानसिक रूप से कमजोर, तनाव ग्रस्त देखने को मिल रहे हैं। जिससे बालक का भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा है। वर्तमान में हमने देखा कि हमारे आसपास का वातावरण नकारात्मकमय हो गया। जो युवा पीढ़ी के भविष्य की राह को कठिन करेगा। वर्तमान में इंसान में सहनशीलता बिल्कुल भी देखने को नहीं मिल रही है, जहाँ देखो वहाँ आपको तीव्र गति से किसी भी प्रश्न का उत्तर मिलेगा। यानी कहा जाए तो लगता है कि इंसान अब छोटे व बड़े में कोई अंतर नहीं रख पाया है। वर्तमान में छोटा व्यक्ति बड़ों के सामने बिना सोचे समझे, बिना फर्क किए कुछ भी बोल देता है। वर्तमान में छोटे बड़े में कोई व्यवहारिक समझ नहीं रही है। वर्तमान में चारों ओर असभ्य भाषा ने व्यक्ति के आचरण को बदल दिया है। हमने प्रायः यह देखा है कि इंसान का रहन – सहन, खान – पान, वेशभूषा सब बदल गई है। इंसान ने खुद को खुद

से अलग कर दिया है। इंसान का चरित्र इंसान ने बदल दिया है।

माता – पिता का बच्चों के प्रति आचरण–धन के लालच में बच्चे अन्धकार में जी रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में देखा जाए तो माता–पिता दिन रात धन को एकजुट करने में लगे हुए हैं। एक–दूसरे से ज्यादा धन कमाने में लगे हुए हैं। यहाँ तक अपना खुद का जीवन स्तर का ख्याल रखे बिना धन की दौड़ में लगे हुए हैं। दूसरी ओर परिवार पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं रख पाते हैं। बच्चों की शिक्षा का ख्याल जरा भी नहीं रख रहे हैं। केवल दूसरों के भरोसे अपने बच्चों को छोड़ देते हैं जो उनके भविष्य के लिए नुकसानदेह हो सकता है। बच्चों को सही शिक्षित करने में ध्यान न रखकर रुपए पैसों की ओर भागना एक गलत कदम हो सकता है। यदि अपना बच्चा शिक्षित है तो धन तो बाद में भी कमाया जा सकता है। परन्तु बच्चों को अंधकार में धकेलकर धन की ओर भागना बच्चों के भविष्य के लिए नुकसानदायक होता है। अपना बच्चा किस प्रकार की शिक्षा हासिल कर रहा है उनका कुछ भी ज्ञान माता – पिता को नहीं है। वर्तमान के माता–पिता कभी भी अपने बच्चों के साथ शिक्षा के प्रति किसी भी प्रकार का कोई संवाद नहीं करते हैं। जिससे बच्चे गलत कदमों की ओर बढ़ जाते हैं। विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन के आदी हो जाते हैं। जो उनके भविष्य के लिए एक खतरा उत्पन्न हो सकता है। माता–पिता को अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से संवाद करना जरूरी है। जिससे बच्चे उनके नियंत्रण में रहें। कुछ भी गलत कदम उठाने से पहले बच्चों के मन में डर रहे। वर्तमान में अगर अपने बच्चे सही शिक्षा हासिल कर अच्छे कार्य करें वही सबसे बड़ा धन है। सभी माता–पिता को दुनिया के सबसे बड़े धन (बच्चों) की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह धन जीवन में सिर्फ एक बार ही अर्जित किया जा सकता है। वर्तमान में आवश्यक है अपने बच्चों के प्रति माता – पिता का का अच्छा आचरण। जिससे बालकों के भविष्य में सुनहरे पंख लगें।

जीवन का आचरण

जीवन में आपसे कौन मिलेगा यह समय तय करेगा,
जीवन में आप किससे मिलेंगे यह आपका दिल तय करेगा।
किन्तु जीवन में आप किस–किस के दिल में बने रहेंगे, यह आपका आचरण तय करेगा।
बेवजह दिल पे बोझ न भारी रखिए,
जिन्दगी एक खूबसूरत जंग है जारी रखिए।

कुमार जितेन्द्र
(कवि, लेखक, विश्लेषक, वरिष्ठ अध्यापक – गणित)
साईं निवास मोकलसर, तहसील – सिवाना
जिला – बाड़मेर, राजस्थान।
पिन कोड 344043
मोबाइल नं0– 9784853785
मेल आईडी – **jitendra-jb-505@gmail-com**

नेतृत्वकर्ता के रूप में अपने को समाज में स्थापित करें शिक्षक तो आसान होगा समस्याओं से निपटना, बढ़ेगा सम्मान

—डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक, संपादक, शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

शिक्षक का कार्य समाज को दिशा देने वाले एक ऐसे दीपपुँज के रूप है जो हमेशा लोगों को सही—गलत के भेद करने, जीवन में आगे बढ़ने के सही मार्ग के चयन करने के लिए निर्णय लेने में प्रकाश देता रहता है। समाज को भावी चुनौतियों व समस्याओं से निपटने के लिए तैयार करता है। वह सिखाता है कि किसी भी कार्य मे बाधाएँ व समस्या अवश्य आती हैं। बस उनसे निपटने की तैयारी आपकी सही होनी चाहिए क्योंकि किसी भी कार्य को करने में यदि समस्याएँ न आएँ तो कार्य के उपरांत मिलने वाले परिणाम का आनंद नहीं महसूस किया जा सकता।

कार्यक्षेत्र में समस्याएँ कम आएँ या आने वाली समस्याओं से कैसे निपटें इसके लिए शिक्षक में नेतृत्व के गुणों का होना बहुत आवश्यक होता है। यदि उसमे एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के गुण है तो निश्चित ही अपने कार्यक्षेत्र की विभिन्न समस्याओं से आसानी से निपट लेगा। साथ ही उसके सहकर्मियों, समाज व छात्र—छात्राओं के बीच उसका सम्मान भी बना रहेगा। अतः एक शिक्षक के भीतर स्वयं नेतृत्व के गुणों का होना बहुत मायने रखता है। एक शिक्षक में नेतृत्वकर्ता के जिन गुणों के होने से वह एक सशक्त नेतृत्वकर्ता शिक्षक के रूप में अधिक सफल हो सकता है।

उसमें इन 05 गुणों का विशेष महत्व हो सकता है।

1. स्पष्टता

हमेशा अपने विचारों, बातों व व्यवहार में स्पष्टता रखें। इससे आपके सहकर्मी और आपसे जुड़े लोगों में आप पर विश्वास बना रहेगा। बार—बार अपने मत में बदलाव करना एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के लिए ठीक नहीं माना जाता।

2. निर्णय

एक बार जब कोई निर्णय ले लें तो प्रतिबद्ध होने में संकोच न करें। अपने निर्णय पर कायम रहें और कभी पीछे न हटें जब तक ऐसा करना नितान्त आवश्यक न हो ।

3. साहस

एक सफल नेतृत्वकर्ता का साहसी होना बहुत आवश्यक है। साहस एक ऐसी चीज है जिसे आप दूसरों के व्यहवहार से भी अपने व्यक्तित्व में विकसित कर सकते हैं।

4. जुनून

अपने लक्षित कार्य को करने का जुनून एक नेतृत्वकर्ता की बड़ी विशेषता होनी चाहिए। समाज के किसी अच्छे नेतृत्वकर्ता के जुनून का अनुसरण कर हम उससे प्रेरणा ले सकते हैं। सबसे अच्छा नेतृत्वकर्ता असीम ऊर्जा और अपने कार्य के लिए जुनून का प्रदर्शन करते हैं।

5. नम्रता

एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के व्यक्तित्व में विनम्रता का गुण होना सबसे महत्वपूर्ण होता है। अच्छे नेतृत्वकर्ता यदि कहीं गलत हैं तो वह विनम्रता से स्वीकार करते हैं कि वह गलत हैं और आलोचना को विकास के अवसर के रूप में लेते हैं। साथ ही दुनिया को दिखाते हैं कि आप जहाँ हैं, उसके प्रति आप कितने आभारी हैं।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र

राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक, संपादक, शिक्षण संवाद

सम्पर्क : 9415047039 Email- sarvestkumar@gmail-com

मिशन गीत

राह में रुकावटें, आयी तो बहुत मगर,
अड़े–डटे खड़े रहे, छोड़ी ना हमने डगर।
मुकाम है विशेष एक, हमने आज पा लिया,
साथ खड़ा ये जहां, रुका नही अभी सफर।

कसम एक आने पर, यहाँ जो तब खायी थी,
कार्य पूर्ण प्रतिशत में, देने की बारी आयी थी।
कर्ज नहीं ये किसी पर, फर्ज़ यही है हमारा,
निश्छल मुस्कान में, जीवनी अपनी पायी थी।

प्रयास आगे जीवन में, रहेगा बस यही सदा,
निष्ठा और ईमानदारी, निभाएँ हम सब सर्वदा।
भविष्य नन्हीं कोपलों का, है हमारे हाथ ही,
शायद हो पाए अपने, शिक्षकों का ऋण अदा।

राजीव कुमार गुर्जर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बहादुरपुर राजपूत,
विकास खण्ड–कुन्दरकी
जनपद–मुरादाबाद।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

6

कालीचरन (प्र0 अ0)

उच्च प्राथमिक विद्यालय इटारा, पिहानी, हरदोई

आज हम आपका परिचय जनपद– हरदोई से शिक्षा के उत्थान के लिए समर्पित शिक्षक भाई कालीचरन जी एवं उनके सहयोगी विद्यालय परिवार की गतिविधियों एवं उपलब्धियों से करा रहे हैं। आपके विद्यालय के उत्थान में किए गये सकारात्मक एवं समर्पित प्रयासों ने समाज में विद्यालय को विश्वास का प्रतीक बना दिया। जिससे आज निजी विद्यालयों की चकाचौंध को को भूल कर बच्चे आपके विद्यालय की ओर लगातार वापस आ रहे हैं। आपके प्रयास हम सभी शिक्षकों के लिए गर्व एवं गौरव के प्रतीक हैं।

किये गए प्रयास

1– विद्यालय में गतिविधि आधारित मनोरंजनात्मक शिक्षा की व्यवस्था एवं मारकर बोर्ड का प्रयोग।

2– विद्यालय का सुंदरीकरण किया गया। आकर्षक पेंटिंग, गमले, पर्दे, पंखे, मैट, साज सज्जा आदि।

3– आर्ट एंड क्रॉफ्ट की शिक्षा।

4– स्कॉउट गाइड की शिक्षा।

5– नियमित खेल– कूद, नृत्य, योगा की कक्षाएं।

6– प्रार्थना सभा में म्यूजिक सिस्टम का प्रयोग, पेपर की खबरे, सामान्य ज्ञान की व्यवस्था।

7– समय– समय पर शैक्षिक भ्रमणरू– नवोदय विद्यालय, सांडी पंक्षी विहार, धोविया आश्रम आदि का शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय एवं बच्चो की उपलब्धियाँ :–

1– 2015 राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में अंत्याक्षरी में प्रथम स्थान।

2– 2017 मंडल स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो–खो में द्वितीय स्थान।

3– सांडी पंक्षी महोत्सव– 2019 निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।

4– जिलास्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में चक्का फेंक, लम्बीकूद, 100 मीटर दौड़, 400 मीटर रिले दौड़, निबन्ध में प्रथम, पी टी, योगा, जिम्नास्टिक, कबड्डी में द्वितीय स्थान, 200 मीटर दौड़, 400 मीटर दौड़ में तृतीय स्थान।

5– जिला स्तरीय आर्ट एंड क्रॉफ्ट प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।

6– मतदाता जागरूकता अभियान के लिए विद्यालय को प्रशस्ति पत्र।

7– पॉलीथिन मुक्त अभियान के लिए विद्यालय को प्रशस्ति पत्र

8– वर्ष– 2019 में ब्लॉक के उत्कृष्ट विद्यालय का पुरस्कार

9– विद्यालय में शत–प्रतिशत उपस्थिति, शैक्षिक स्तर में सुधार, नामांकन में वृद्धि, अभिभावकों की सहभागिता आदि।

10– प्राइवेट स्कूलों से नाम पृथक करवा कर अब सरकारी विद्यालय में बच्चे नाम लिखा रहे है नामंकन में लगातार वृद्धि हो रही है।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_43.html

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/09/blog-post_36.html

सुशीला चौधरी (प्र०अ०)

प्राथमिक विद्यालय नरहौली प्रथम, मथुरा

जनपद– मथुरा से अनमोल रत्न शिक्षिका बहन सुशीला चौधरी जी ने अपनी सकारात्मक सोच और समर्पित व्यवहार कुशलता से अपने विद्यालय को सामाजिक विश्वास का केन्द्र बना दिया है जो हम सभी के लिए प्रेरक और अनुकरणीय प्रयास है। उनका मानना है कि :–

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती.... और
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

बच्चों को खेल गतिविधियों द्वारा सांसतिक कार्यक्रमों के माध्यमों से पढ़ाई करायी गयी। बच्चों को विभिन्न प्रकार के **TLM** के द्वारा तथा उनको प्रेरक कहानियों को सुनाकर तथा दिखाकर शिक्षण कार्य करना प्रारम्भ किया। बच्चों को प्रार्थना सभा में प्रतिदिन स्वच्छता के बारे में बताया गया। नैतिक मूल्यों के बारे में भी बताया गया। बच्चों को शरीर की दैनिक स्वच्छता के बारे में भी बताया जाता है। प्रतिदिन योगा व पी. टी. भी करायी जाने लगी। बच्चों को पेड़ –पौधों की देखभाल व पौधों को लगाना क्यों आवश्यक है इसकी भी जानकारी दी जाने लगी और अभी भी यह सब गतिविधियाँ विद्यालय में प्रतिदिन होती है।

वन्दना गुप्ता

प्राथमिक विद्यालय विशेषरपुर, भदपुरा, बरेली

Https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/10/blog-post_95.html

कुछ चर्चा बेसिक शिक्षा को बेहतर बनाने की...

शिक्षण संवाद

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के मार्ग में मुख्य अवरोधक शिक्षणेत्तर कार्य

प्राथमिक स्कूलों में सबसे बड़ी समस्या स्टाफ का पूरा ना होना तथा जो शिक्षक उपलब्ध हैं उनका शैक्षणिक गतिविधियों से इतर अन्य गतिविधियों में संलग्न होना है। जैसे की वर्तमान में जारी बी एल ओ कार्य है। इस कार्य को संपन्न करने की कोई सीमा नहीं है। शिक्षक लगभग पूरे साल इसी में उलझा रहता है। वह फील्ड में जाकर चाहे जितना कार्य निपटा ले, तब भी लोग उसका पीछा नही छोड़ते। स्कूल समय में जबकि वह शिक्षण कार्य में व्यस्त होता है, लोग विभिन्न कारणों से आकर उसे डिस्टर्ब करते रहते हैं। एक स्कूल स्कूल ना रहकर चुनाव कार्यालय बना रहता है। उस पर वे लोग यह प्रतिक्रिया भी देते हैं कि ये तो सरकारी स्कूल है, यहाँ तो वैसे भी पढ़ाई नहीं होती। ऐसे में वे शिक्षक जोकि वास्तव में मनोयोग से पढ़ाते हैं अत्यन्त क्षुब्ध व हतोत्साहित हो जाते हैं।

निर्वाचन कार्यालय द्वारा कभी भी बी.एल.ओ. को कार्यालय बुला लिया जाता है तथा उन्हें अप्रत्याशित कार्य तुरंत करने हेतु निर्देशित कर दिया जाता है। ऐसे में शिक्षक यही निर्णय नहीं ले पाता कि वह पहले शिक्षक धर्म निभाए या फिर बी.एल.ओ. ड्यूटी। शिक्षक विहीन कक्षाओं के बच्चों को मात्र समय व्यतीत करने हेतु संभाला जा सकता है, उन्हें सिलेबस के अनुसार पढ़ाया नहीं जा सकता। अपना पूरा समय निष्ठापूर्वक बच्चों को ना दे पाने के कारण प्राथमिक शिक्षक अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाता।

सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षक की तुलना प्राइवेट स्कूल के शिक्षकों से की जाती है तथा उन साधन संपन्न व एक ही उद्देश्य वाले स्कूल के अध्यापकों को हमसे बेहतर बताया जाता है। अगर प्राइवेट स्कूल के समान हम प्राथमिक शिक्षकों को भी सिर्फ अपनी कक्षा पर ही फोकस करना हो तो हम निश्चित रूप से उनसे बेहतर परिणाम देने में सक्षम हैं।

जैसा की उच्च न्यायालय द्वारा भी बार–बार सरकार को निर्देशित किया जाता रहता है कि शिक्षकों से किसी भी प्रकार का शिक्षणेत्तर कार्य ना कराया जाए, मैं भी यही चाहती हूँ कि सरकार द्वारा इस कार्य पर तुरंत से रोक लगायी जाए। इस कार्य को सरकार एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज में दर्ज बेरोजगारों से करा सकती है। शिक्षकों को शिक्षण कार्य ही करने दिया जाए जिससे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य पूर्ण किया जा सके।

देश से अपराधीकरण को घटाने तथा देशभक्ति की भावना जागृत करने में सहायक

विषय ज्ञान के अतिरिक्त देश में नैतिकता, स्व–रक्षा, देश के प्रति सम्मान व बढ़ते हुए रेप केसेस बहुत बड़ी चुनौती हैं। हम बच्चों को पढ़ा तो रहे हैं किंतु एक अच्छा नागरिक व एक अच्छा इंसान नहीं बना पा रहे। इसी कारण हमारे देश में अपराध, जातिगत ध्रुवीकरण व वैमनस्यता बढ़ती जा रही है। प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे जिन परिवारों से आते हैं, वे अधिकांशतः मजदूरी करने वाले निरक्षर लोग हैं। ये लोग अपने बच्चों को नागरिकता तथा अच्छा मानव बनने हेतु शिक्षित व प्रेरित नहीं कर सकते। यह कार्य सबसे अच्छे तरीके से प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा ही किया जा सकता है।

विद्यालयों में इस विषय को नियमित पाठ्यक्रम के रूप में अपनाया जाना चाहिए। जिसे अन्य विषयों के समान स्कूल के टाइम टेबल में शामिल किया जाए। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि शिक्षक इस विषय की महज खाना–पूर्ति ना करें। इसके लिए विशेष रूप से निरीक्षण व आंकलन हेतु टीम गठित हो। स्कूल के कुल निर्धारित समय में से कम से कम 30 से 40 मिनट इन सामूहिक गतिविधियों हेतु निर्धारित हो। बच्चे व शिक्षक में संवाद स्थापित करने का प्रयास किया जाए। बच्चों को आत्मरक्षा हेतु जूडो–कराटे आदि भी अनिवार्य रूप से सिखाये जाएँ। इससे बालिकाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा वे स्वयं की सुरक्षा करने में भी संपन्न होंगी।

ये सभी बातें आराम से हर विद्यालय में लागू की जा सकती हैं। जूडो–कराटे को छोड़कर अन्य किसी भी विषय हेतु शिक्षकों को किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु समय–समय पर शिक्षकों को अधिकारियों से सकारात्मक मोटिवेशन इस संबंध में मिलता रहना चाहिए।

यदि इन सभी बातों पर सरकार अमल करे तो निश्चित रूप से बेसिक शिक्षा को सबसे बेहतर बनाया जा सकता है।

रीता गुप्ता
सहायक अध्यापिका
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेहट न० एक
विकास क्षेत्र–साढोली कदीम
ज्नपद–सहारनपुर।

अल्फाबेट मैट

विषय– अंग्रेजी   कक्षा– 1 व 2

प्रयुक्त सामग्री–
अवशेष राशन के बोरे, मैट, कढ़ाई वाली सुई, रंगीन धागे, ऊन

उपयोगिता–
इसके माध्यम से बच्चे सरल, सुगम व खेल खेल में अंग्रेज़ी की वर्णमाला सीख सकेंगे।

सुमन पाण्डेय
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी
विकास खण्ड–खजुहा
जनपद–फतेहपुर।

स्वर चिड़िया

विषय– हिंदी   कक्षा– 5

प्रयुक्त सामग्री–
चार्ट, रंग, पेन, पेंसिल, रबर

उपयोगिता–
स्वरों के बारे में जानकारी करने हेतु

रीना देवी कुटार,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय टिकरी बुजुर्ग,
विकास खण्ड–मौदहा,
जनपद–हमीरपुर।

शिक्षण गतिविधि

उछलेगा पासा निकलेगा हल

शिक्षण संवाद

विवरण– इस गतिविधि में हम सपाट पासा का प्रयोग करते है जिसमें 9 भिन्न भिन्न प्रकार की संख्या लिख देते हैं और बहुत सारी कुछ कागज की पर्चियां बनाते हैं जिसमें प्रत्येक बच्चे से एक एक कोई भी वस्तु का नाम लिखवाते है या उनका चित्र

बनवाते हैं। फिर उन पर्चियों को एक प्लेट में रख लेते हैं। अब हम कोई बच्चे को रेंडमली या कोई क्विक गेम के माध्यम से बच्चों को एक एक करके बुलाते हैं और उनसे एक पर्ची उठाने को बोलते हैं पर्ची में जिस वस्तु का नाम लिखा होगा उसे वो सबके सामने जोर से पढ़ेगा। उसके बाद उस ग्रुप के सभी बच्चे भी इस वस्तु को ध्यान में रखते हैं। फिर वह बच्चा एक सूचक (बोतल, पेन आदि) लेकर सपाट पासे की तरफ पीठ करके खड़ा हो जाएगा और बोतल को पासा में उछाल कर फेंकेगा। तब जिस संख्या में बोतल गिरेगी उस संख्या को वस्तु का क्रय मूल्य यानी इतने रुपये में वस्तु खरीदी गई(पहली फेंक यानी उछाल वस्तु के क्रय मूल्य के लिए होगी) अब उस बच्चे के साथ साथ सभी बच्चे भी इस संख्या को नोट कर लेंगे। अब दूसरी बार वह

बोतल को उछालेगा जो वस्तु के विक्रय मूल्य के लिए होगी फिर बोतल जिस संख्या में गिरती है उसको वस्तु के बेचने का मूल्य मान कर झट से उत्तर बताना है अगर पूरे समूह से पहले बच्चा बता

देता है तो वो विनर नहीं तो उसको दुबारा वही प्रक्रिया दोहराएगा। इस तरह बच्चे इस रुचिकर और प्रतिस्पर्धा के साथ लाभ हानि के कांसेप्ट को आसानी से आत्मसात कर लेंगे।

गतिविधि के अनुप्रयोग– इस गतिविधि को वर्ग वर्गमूल , घन और घनमूल में और छोटी क्लास में जोड़ घटाने में प्रयोग लायी जा सकती है।

कक्षा और विषय– 6,7 और 8 गणित

बैठक व्यवस्था– छोटे समूह में पूरी कक्षा

शिक्षण कार्य का स्वरूप– मौखिक एव

निर्माण कर्ता

LOKESH PAL

A-T

Ups ninavali jageer

Block rampura

Jalaun

माह नवम्बर की गतिविधि का नाम -

"धो ...अशुद्धि खो"

शिक्षण संवाद

ग्रामीण क्षेत्र में अक्सर आपने देखा होगा की कटोरी में खाए जाने वाले दही या खीर के खत्म होने पर लोग उस कटोरी में पानी डालकर पी जाते हैं। आपको याद है न जब आपने कभी आलस्य में बिना हाथ धोये खाना खाकर, अपने हाथों की उँगलियों को पानी के गिलास में घंघोया हो तो शायद आपने कभी उसे दूसरे न देख पायें इस शर्म से छिपाया भी हो। पर क्या आप गिलास के इस मटमैले पानी को पीने की हिम्मत जुटा पाए ? अगर नहीं ! तो आज जान ही लेते है उस जानलेवा सच को ...

क्याकरना है ?

हाथ धोने के बाद पानी में पायी जाने वाली अशुद्धि का पता करना।

क्या चाहिए ?

दो काँच के पारदर्शी गिलास, एक लोटा स्वच्छ पानी, एक मित्र कैसे करना है ?

1. लोटे से स्वच्छ पानी दोनों गिलासों में डालें।
2. आप अपने साफ हाथों की उँगलियों को एक गिलास के पानी में घंघोंयें।
3. क्या पानी का रंग बदला ?
4. अब अपने मित्र के गंदे हाथों की उँगलियों को दूसरे गिलास के स्वच्छ पानी में घंघोंने को कहें।
5. क्या पानी का रंग बदला ?

क्या कर लिया ? आप दोनों लोगों ने हाथ घंघो लिए।

शाबास ! धो डाला। है न आसान !

लेकिन पहले गिलास के पानी की तुलना में दूसरे गिलास का पानी ज्यादा गंदा हो गया।

आखिर क्यों ?

गंदे हाथों की उँगलियों में चिपके धूल के कण और कीटाणु पानी में धुल गए यदि हम इस पानी को पियेंगे तो जरूर हम डाक्टर से मिलेंगे क्योंकि दूषित जल के पीने से जीवाणु जनित टाइफाइड, विषाणु जनित पोलियो, प्रोटोजोआ जनित पेचिस, कृमि जनित फाइलेरिया रोग हो जाते हैं।

चर्चा के बिंदु (शिक्षक बच्चों को विस्तार दें !):

पारदर्शी, जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ, कृमि

उबालकर,
छानकर, क्लोरीन की गोली
अथवा समुचित मात्रा में लाल दवा डालकर
पानी को पीने योग्य
बना सकते हैं।

मनीष कुमार
राज्य अध्यापक पुरस्कृत
स.अ. – राष्ट्रीय विज्ञान संचारक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगंज
विकास खंड सहार
जनपद औरैया
Youtube:GyanKa Yan
Email: manishyadav1407@gmail-com

HOW TO EASE TEACHING AND LEARNING ENGLISH

It has been 2 years since Primary School Padri was converted into a English Medium Primary School. I along with four assistant teachers joined this school and since then we have been trying to upgrade the quality of education that was being imparted. The time has been flowing constantly like a river.

I noticed a few differences between our students and other students of the primary schools. Our students are no longer alien to this language. They have got accustomed to new words spoken by us in everyday conversations.

When they meet their friends or relatives from some urban area, I am sure they will not stand dumbfounded with them. They know the meaning of whatever the other person is saying and they are already answering without thinking that they may be grammatically incorrect. Our students have mastered unfamiliar sounds and they know the correct pronunciation of words. Their confidence comes from not always being right but not fearing to be wrong. In these two years our students have grown more and more confident and a way more smarter from what they were two years ago. This confidence in them has given the parents and the rural society a sense of pride that their children are not standing out as a thumb, but in fact they are a part of this society. It has reduced disparities among children.

When our children will pursue higher education they will not feel the discomfort, the pressure, the tension which is faced by the Hindi medium

students studying in universities because almost all the universities use English as the medium of instruction. Whether our children are entering into business world or doing a job under someone their knowledge of English will be for their benefit. They can learn Hi-Tech farming techniques through internet and Google

Our teachers are always on their toes ready to learn new topics, new subjects and teach them. Hard work always shines English is a language by default and a window to the world. We're trying to show our students the sparkling world through this window. Knowing English language helps them to get over the inferiority complex which the children of rural areas have been facing from like to conclude that opening English medium schools in rural areas will help in making a better India.

Nidhi Nagpal,

Head Teacher,

English Medium Primary School Padri,

Block-Badagao,

District-Jhansi.

■ प्रेरक प्रसंग

ऑटोग्राफ

शिक्षण संवाद

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और बच्चों के बीच लोकप्रिय चाचा नेहरू बच्चों से बहुत अनुराग रखते थे। बच्चों के साथ उनका विनोदप्रिय स्वभाव बच्चों को उनके और करीब ले आता था। एक बार की बात है एक कार्यक्रम के दौरान एक बच्चा उनका ऑटोग्राफ लेने मंच पर पहुँचा और कहा—चाचा नेहरू जी साइन कर दीजिए।

चाचा नेहरू ने साइन कर दिए जब ऑटोग्राफ पुस्तिका लेकर बच्चा आगे पहुँचा तो उसने देखा कि नेहरू जी ने तो साइन के नीचे तारीख लिखी ही नहीं। वह बच्चा वापस पहुँचा और कहा— चाचा जी आपने तारीख तो लिखी ही नहीं। नेहरू जी ने मुस्कारते हुए ऑटोग्राफ पुस्तिका ली और उर्दू में तारीख लिख दी। बच्चे ने जब देखा तो उसने कहा — आपने साइन तो अंग्रेजी में किये और तारीख उर्दू मे क्यों लिखी?

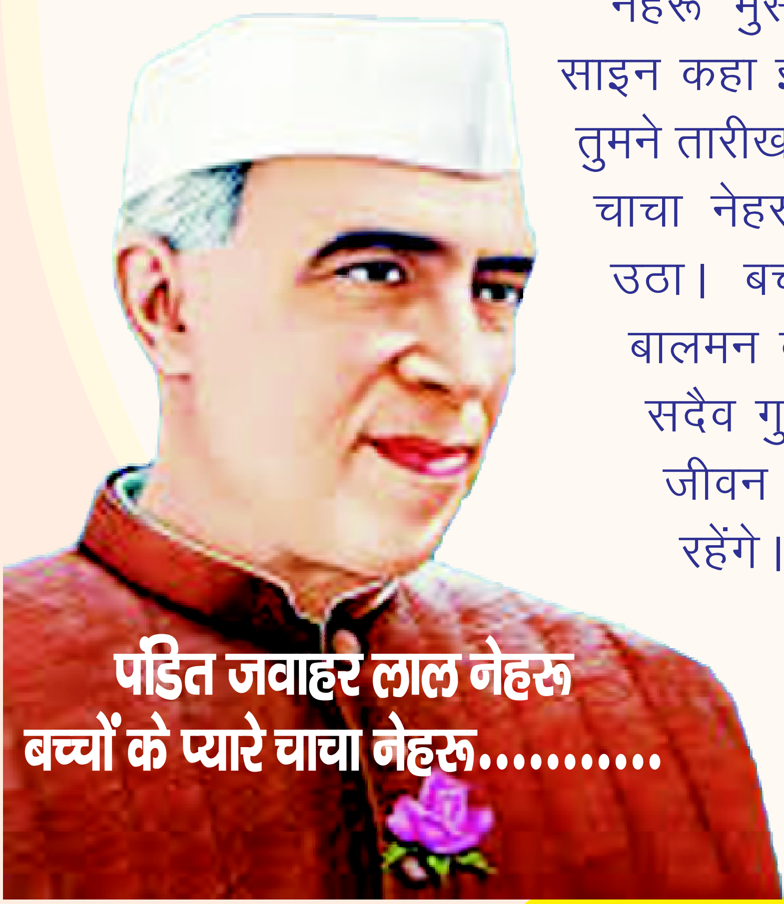

नेहरू मुस्कराये और बोले बेटा — तुमने साइन कहा इसलिए मैंने अंग्रेजी में किया और तुमने तारीख कहा तो मैंने उर्दू मे लिखा। बच्चा चाचा नेहरू की यह बात सुनकर मुस्करा उठा। बच्चों की कोमल भावनाओं और बालमन को पंसद करने वाले चाचा नेहरू सदैव गुलाब की भाँति बच्चों के मन और जीवन को सुंदर और सुगंधित करते रहेंगे।

डॉ0 अनीता ललित मुदगल
प्रधानाध्यापिका,
श्री श्रद्धानंद प्राथमिक पाठशाला,
नगर क्षेत्र—झींगुरपुरा,
जनपद—मथुरा (उ.प्र.)

सद्विचार

विपिन चंद्र पाल

भारत के क्रान्तिकारी विचारों के जनक

शिक्षण संवाद

विपिन चन्द्र पाल एक भारतीय क्रान्तिकारी, शिक्षक, पत्रकार व लेखक थे। उनका जन्म 7 नवम्बर 1858 हबीबगंज जिला (बंग्लादेश) में हुआ था। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की बुनियाद तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभायी थी। वे मशहूर लाल –बाल–पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चंद्र पाल) तिकड़ी का हिस्सा थे। उन्हें भारत में क्रान्तिकारी विचारों का जनक भी माना जाता है। उन्होंने 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बड़ा योगदान दिया। अपने गर्म विचारों के लिए मशहूर पाल ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा दिया। विपिन चंद्र पाल ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान आम जनता में जागरूकता पैदा करने में अहम् भूमिका निभाई। उन्हें क्रान्तिकारी विचारों का पिता भी कहा जाता है।

बहुत छोटी आयु में ही विपिन ब्रहम समाज में शामिल हो गए थे और समाज के अन्य सदस्यों की भाँति वे भी सामाजिक बुराइयों और रुढ़िवादी परम्पराओं का विरोध करने लगे। उन्होंने जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठायी और अपने से ऊँची जाति वाली विधवा महिला से विवाह किया। जिसके पश्चात उन्हें अपने परिवार से नाता तोड़ना पड़ा। पाल धुन के पक्के थे, इसलिए पारिवारिक और सामाजिक दबावों के बावजूद समझौता नहीं किया। पाल और अरविन्द घोष ने एक ऐसे राष्ट्रवाद का परवर्तन किया जिसके आदर्श थे पूर्ण स्वराज, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा। पाल ने क्रांतिकारी पत्रिका 'वन्दे मातरम' की स्थापना भी की थी। तिलक की गिरफ्तारी और स्वदेशी आन्दोलन के बाद अंग्रेजों की दमनकारी निति के बाद वे इंग्लैंड चले गए। वहाँ जाकर वे क्रान्तिकारी विधारधारा वाले 'इंडिया हाउस' (जिसकी स्थापना श्यामजी कृष्ण वर्मा ने की थी) से जुड़ गए और 'स्वराज' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। जब क्रांतिकारी मदन लाल ढींगरा ने सन 1909 में कर्जन वाइली की हत्या कर दी तब 'स्वराज' का प्रकाशन बंद कर दिया गया और लंदन में उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। इस घटना के बाद विपिन चन्द्र पाल ने अपने आप को उग्र विचारधारा से अलग कर लिया। वंदे मातरम् राजद्रोह मामले में उन्होंने अरबिन्दो घोष के खिलाफ़ गवाही देने से इंकार कर दिया जिसके कारण उन्हें 6 महीने की सजा हुई।

क्रांतिकारी के साथ–साथ, विपिन एक कुशल लेखक और संपादक भी थे। उन्होंने कई रचनाएँ भी की और कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी किया जिसमें मुख्य रुप से इंडियन नेशनलिज्म, नैशनल्टी एंड एम्पायर, स्वराज एंड द प्रेजेंट सिचुएशन, द बेसिस ऑफ रिफार्म, द सोल ऑफ इंडिया, द न्यू स्पिरिट, स्टडीज इन हिन्दुइस्म, क्वीन विक्टोरिया बायोग्राफी है। इसके अलावा विपिन जी ने लेखक और पत्रकार के रूप में बहुत समय तक कार्य किया। जिसमें परिदर्शक (1880), बंगाल पब्लिक ओपिनियन (1882), लाहौर ट्रिब्यून (1887), द न्यू इंडिया (1892), द इंडिपेंडेंट, इंडिया (1901), वन्देमातरम (1906, 1907), स्वराज (1908 –1911), द हिन्दू रिव्यु (1913), द डैमोक्रैट (1919, 1920), बंगाली (1924, 1925) आदि पत्र पत्रिकाएँ है।

20 मई 1932 को इस महान क्रान्तिकारी का कोलकाता में निधन हो गया। वे लगभग 1922 के आस–पास राजनीति से अलग हो गए थे और अपनी मृत्यु तक अलग ही रहे।

डॉ0 सुमन रानी अग्रवाल
प्रधानाध्यापिका
शिवा प्राथमिक पाठशाला,
विकास खण्ड–हापुड़ नगर क्षेत्र,
ज्नपद–हापुड़।

केशु

(एक मार्मिक प्रेरक बाल फिल्म)

शिक्षण संवाद

यह कहानी है केशु नाम के एक ऐसे मूक–बधिर बच्चे की, जो रचनात्मक कला–प्रतिभा का धनी है, लेकिन समाज की उपेक्षा के कारण वह थोड़ा विद्रोही स्वभाव का हो गया है। मातृ–पितृविहीन केशु अपने मामा के साथ रहता है।

ऐसे में उसके गाँव में एक शिक्षिका आती हैं, जो केशु के ही घर में किरायेदार के रूप में रहती हैं। शुरू में केशु उन्हें भी परेशान करता है लेकिन शीघ्र ही वे शिक्षिका अपने प्यार से न केवल केशु का विश्वास जीत लेती हैं बल्कि उसके गुणों को उभारकर उसकी प्रतिभा को दुनिया के समक्ष लाती हैं। उसकी खुशी और आत्मविश्वास को नये पंख प्रदान करती हैं। लेकिन अचानक एक दिन जब शिक्षिका को जाना होता है, तब.....

फिल्म की विशेषता हैं भावनाओं और परिस्थितियों के वे मार्मिक चित्रण, जो एक संवेदनशील व्यक्ति की आँखों को सहज ही नम कर देंगे।

साथ ही यह फिल्म एक शिक्षक को प्रेरित करती है कि वह उपेक्षा के शिकार किसी बच्चे के प्रति कितना संवेदनशील और सहानुभूतियुक्त होकर व्यवहार करे और दूसरी ओर उपेक्षित/वंचित बच्चों में यह फिल्म एक भरोसा भी पैदा करती है कि खुला आसमान उनका भी इंतजार कर रहा है।

मूलतः मलयालम भाषा की इस फिल्म को श्रेष्ठतम बाल फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला है।

समीक्षा–प्रस्तुति :
प्रशान्त अग्रवाल, सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
विकास क्षेत्र फतेहगंज पश्चिमी,
जनपद–बरेली (उ.प्र.)

Https://youtu.be/FjMiD2xnIT4

बच्चों का कोना

प्राथमिक विद्यालय

बाल कविता

ये है प्राथमिक विद्यालय,
ये है प्राथमिक विद्यालय।
नित्य प्रार्थना में गुरुजन,
देते हैं सीखें न्यारी।
पाकर सीख भविष्य संवारे,
बच्चे और नर–नारी।
हरा भरा उपवन है,
इसमें भाँति–भाँति की क्यारी।
हर क्यारी में लगी हुई है,
सब्जी और फुलवारी।
ये है प्राथमिक विद्यालय,
ये है प्राथमिक विद्यालय।
विद्यालय में गूँज रही है,
बच्चों की किलकारी।
बच्चे हँसते गाते आते,
दिन भर पढ़ते और पढ़ाते।
भाँति –भाँति के भोजन,
रोज बनायें आन्टी प्यारी।
भोजन पाकर स्वस्थ बनें हम,
दूर होवे बीमारी।
ये है प्राथमिक विद्यालय,
ये है प्राथमिक विद्यालय।
शिक्षा से उन्नत समाज है,
शिक्षा से सबका विकास।
शिक्षा ऐसी औषधि होती,
दूर करे लाचारी।
विद्यालय में गुरुजन बोलें,
स्कूल आना बहुत जरूरी।
ये है प्राथमिक विद्यालय,
ये है प्राथमिक विद्यालय।

सुनीता यादव
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय फत्तेपुर मीरा बेहड़,
विकास क्षेत्र–हरगांव,
जनपद –सीतापुर।

बाल कहानी

डर के आगे जीत है

शिक्षण संवाद

वीर! उठो जल्दी करो, वरना स्कूल को लेट हो जाओगे। माँ ने वीर को जगाते हुए कहा पर वीर टस से मस नहीं हुए। अबकी बार माँ ने झिझोड़ कर जगाया। बेटा! देर हो जाएगी। माँ! मेरा मन नहीं है। मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा, वीर बोले। माँ ने हैरानी से उनकी तरफ देखा और बोलीं–क्या बात है जो तुम्हें परेशान कर रही है?क्या किसी से झगड़ा हुआ है या कुछ लर्न नहीं है? नहीं माँ! ऐसा कुछ भी नहीं है। बस मुझे आज तो क्या कई दिनों तक स्कूल ही नहीं जाना है?
वीर ने हकलाते हुए जल्दी से अपना निर्णय माँ को सुनाया। वीर! अपनी परेशानी मुझे बताओ बच्चे। हर समस्या बातचीत से ही हल होती है। माँ ने प्यार से कहा। माँ! मैंने अखबार में पढ़ा है, टी.वी पर देखा है और स्कूल में सुना है कि बच्चों को चुराने वाला गिरोह वेश बदलकर और नये–नये ढंग से बच्चों को चुरा लेते हैं। मैं स्कूल तो क्या घर से बाहर भी नहीं निकलूँगा जब तक पुलिस सबको पकड़ नहीं लेती है। वीर ने कहा। बेटा! किसी भी समस्या से डर कर भागना हल नहीं है। हमें हर परेशानी का सामना अपनी सूझ–बूझ से करना चाहिए। माँ ने कहा।

पर माँ! मुझमें इतनी ताकत नहीं है कि मैं किसी भी बदमाश को लात–घूँसों से मार–मार कर बेहाल कर दूँ। वीर ने फिल्मों के देखे दृश्यों को याद करते हुऐ कहा। बेटा! मैं मानती हूँ कि ताकतवर होना बहुत जरूरी है पर उससे ज्यादा जरूरी है अपनी अक्ल का सही इस्तेमाल करना। जहाँ ताकत काम न आये वहाँ हम अपनी बुद्धि का प्रयोग कर हर समस्या चुटकियों में सुलझा सकते हैं। देखो, बच्चों को कभी भी मिठाई, टॉफी, चॉकलेट या आइसक्रीम के लालच में नहीं आना चाहिए। आते–जाते सतर्क रहो। मम्मी –पापा की फोन पर आवाज पहचानो। अपना कोडवर्ड जरूर बनाओ जिससे तुम समझ सकोगे कि तुम अपने परिवारजनों से ही बात कर रहे हो इन सब बातों का ध्यान रखने से तुम सुरक्षित हो सकोगे। अगर कोई जबरदस्ती करे तो तुम चिल्लाओ–मदद माँगो। आसपास के लोग तुम्हारी मदद करेंगें। माँ ने समझाते हुए कहा। वीर बोले–आपकी बातों से कुछ डर तो कम हुआ है पर यदि कुछ ऐसा हुआ तो क्या मैं कुछ कर पाऊँगा या नहीं। वीर अभी भी डर पर काबू नहीं कर पाये थे। मेरा बेटा बहादुर है। पापाजी ने भी वीर का हौसला बढ़ाया। अब हर किसी की जबान पर बच्चे चुराने वाले गिरोह का ही जिक्र था चाहे स्कूल, पार्क, घर या बाजार हो।

फिर एक दिन
स्कूल से वापस लौटने पर वैन में शोरगुल, धमा–चौकड़ी मची हुई थी। वैन सिग्नल पर खड़ी थी तभी बराबर में एक कार आकर रुकी। कार के अंदर दो महिलाएँ और उनका बच्चा था। वीर की नजर उस बच्चे पर पड़ी।वह डरा,सहमा वीर की ओर ही देख रहा था। तभी एक महिला ने उस बच्चे को डॉट कर कुछ कहा। उस बच्चे ने नजर तो झुका लीं पर नीचे सर कर होंठ हिलाये। वीर को कुछ खतरे का अहसास हुआ। उसंने दौड़कर वैन वाले अंकल से कान में कुछ कहा। वैन वाले अंकल ने फोन निकालकर सौ नम्बर पर सूचना दी। तब तक ग्रीन सिग्नल होते ही कार फर्राटा भर कर काफी आगे निकल चुकी थी। अब वैन वाले अकंल और बच्चों के लिए उस कार तक पहुँचना किसी चुनौती से कम नहीं था। इस सड़क से उस सड़क दोनों ही वीडियो गेम की रेसिंग कार की तरह आगे–पीछे। कार का इस तरह भगाना भी सबको संदेह को डाल गया कि कुछ तो गलत है।
आखिर में इधर वैन, उधर पुलिस और बीच में कार। कार का दरवाजा खुलने पर सबके होश उड़ गये। कुछ बच्चे बेहोश सीट के नीचे थे। पुलिस ने सबको हिरासत में ले लिया। बच्चों को हॉस्पिटल में इलाज के लिए भेज दिया गया। पुलिस, अखबार और स्कूल में सबने वीर की सतर्कता की प्रशंसा की। अब वीर समझ गए कि सतर्कता से हम बडी दुर्घटनाओं को होने से रोक सकते हैं।

डॉ0 प्रवीणा दीक्षित
हिन्दी शिक्षिका
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र,
जनपद–कासगंज।

वाह नो बैग डे

शिक्षण संवाद

अब न होता विद्यालय नीरस,
जब से चला है प्रतिभा दिवस।।
कहने को तो नो बैग डे है,
पर ज्ञानार्जन को मस्ती भरा डे है।।
बिना बैग के हल्के रहते,
स्कूल भी बच्चे खुशी से आते।।
हर बच्चे में छिपे कई गुण,
टीचर को कहते मेरी भी सुन–सुन।।
तरह–तरह के खेल खिलाते,
बच्चे तो फिर खुश हो जाते।।
कोई भी बच्चा छूट नहीं पाता,
प्रतिभा दिवस तो जब भी आता।।
इसमें न होता कोई दिखावा,
बच्चे की दिखती मौलिकता।।
हर बच्चा है गुणों की खान,
इस दिवस से होती उनकी पहचान।।
बच्चे भी कहने हैं लगे,
हौसले भी अपने बुलन्द करेंगे।।
न मिले मंच तो कोई बात नहीं,
हम अपना मंच बना लेंगे।।
प्रतिभा दिवस से होगी प्रतिभाओं की पहचान,
जिससे बढ़ेगी विद्यालय की शान।।

रचयिता
इन्दु पंवार
प्रधानाध्यापक,
रा. प्राथमिक विद्यालय गिरगाँव,
जनपद-पौड़ी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_23.html

क्योंकि मैं नारी हूँ.....

फूलों से भी कोमल है जिसका तन मन
फिर भी ज्वाला सी जल सकती है प्रतिपल।
मैं नारी हूँ, ईश्वर की अद्भुत रचना
ना जाने कितने ऋषि, मुनियों,कवियों के तप और लेखनी की प्रेरणा।
रचनाकार ने मेरी सृष्टि की, सृष्टि की सृष्टि के लिए, निर्माण के लिए।
इस प्रकृति का रूप स्वरूप मुझसे है,
इसलिए जो मुझमें है वही प्रकृति में भी है।
मेरा सौंदर्य ही सृष्टि के सौंदर्य का प्रेरक है।
मुझमें तेज है जो सृष्टि को अग्नि देता है, प्राण देता है।
मुझमें वेग है जो इस निश्चित धुरी पर स्थित पृथ्वी की गति का स्रोत है।
मुझमें भावनाएँ हैं, इसीलिए तो प्रत्येक प्राणी इस प्रेम अथवा मोह जैसे कच्चे धागे में बँधा है।

किन्तु.......क्या ये सौंदर्य पानी पर तेल की तरह केवल ऊपरी आच्छादन है?जो पुरुष को माधुर्य नहीं कामुकता की प्रेरणा देता है? मेरा तेज आज पापों को नष्ट नहीं कर सकता प्रत्युत मेरा ये तेज मुझे ही जलाकर नष्ट कर देता है। सम्पूर्ण सृष्टि को वेगवान गतिमान करता मेरा वेग रूप, आज केवल मेरी माँ की कोख तक है और मेरी माँ का (वेग)केवल लक्ष्मण रेखा के उस पार तक। क्योंकि मैं इस संसार में आयी तो शायद ये अति वेगवान संसारी तूफान मुझे तिनके की तरह ना उड़ा दे और दूसरी ओर यदि मुझे विवश हो लक्ष्मण रेखा पार करनी पड़ जाए तो मेरा भाग्य रावण के हाथों में है।

ऐसे संसार की प्रेरणा स्रोत बनी मैं नारी आज स्वयं सोचती हूँ कि अपने हृदय में उठते ममता के मधुर रस को पिलाकर पुष्ट किए इस संसार में मेरा अस्तित्व, मेरा लक्ष्य क्या है? कहीं आज मैं (नारी)लक्ष्य विहीन तो नहीं हो गई?हाँ .....शायद ये मेरी लक्ष्य विहीनता ही है, जो मैं अपना अस्तित्व पुरुषों की वेशभूषा में, पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ पर अथवा अपने लज्जा के वस्त्रों को कम करके कठपुतली के रूप में ढूँढ रही हूँ। यदि मैं ही पथविहीन हो जाऊँगी तो सम्पूर्ण संसार भी तो विनाश की ओर बढ़ने लगेगा। जो भी हो मुझे अपने अस्तित्व को ढूँढने के लिए इस अंधकार को दूर करना है अपने तेज से....और मैं ये अवश्य कर सकती हूँ... क्योंकि मैं तेज हूँ, वेग हूँ, सौंदर्य हूँ।

क्योंकि मैं नारी हूँ

डॉ0 रेणु देवी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय नवादा,
जनपद–हापुड़।

कर्मसु कौशलम

शिक्षण संवाद

योग का सामान्य अर्थ है जोड़ना जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ा जाता है। आज के वर्तमान परिवेश को देखते हुए सभी वर्ग के लोगों बुजुर्गों, युवाओं, बालक–बालिकाओं को योग को अपनाना नितांत आवश्यक हो गया है। आज जब हमारे मोबाइल की बैटरी खत्म हो जाती है तो हम तुरंत उसे चार्ज करने के लिए परेशान हो जाते हैं। इसी प्रकार हमें अपनी शरीर रूपी बैटरी को चार्ज करने के लिये चिंतन करना आवश्यक हो गया है।

हम अपने शरीर को योगा और प्राणायाम के द्वारा चार्ज कर सकते हैं। योग को अपनाकर हम अपने शरीर को लंबे समय तक चार्ज रख पाएँगे। योग का नियमित अभ्यास हमें शारीरिक एवं मानसिक तनावों से दूर रखता है। प्रतिदिन 20–30 मिनट योग हमारे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सन्तुलन को बढ़ाता है जो व्यक्ति को मजबूत बनाता है और हमारे जीवन को एक नयी दिशा मिलती है। आज की भागमभाग जिंदगी में योगा और प्राणायाम अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रतिदिन यदि हम योगा और प्राणायाम को अपना लें तो हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा और हम ऊर्जावान रहेंगे और अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक कर सकेंगे।

योगा और प्राणायाम के अनगिनत लाभ हैं...

- ✓ योगा के नियमित अभ्यास से तनाव दूर होता है।
- ✓ मन शांत होता है।
- ✓ योगा का नियमित अभ्यास हमारे दिमाग, मस्तिष्क के साथ हमारी आत्मा को भी शुद्ध करता है।

पूरे प्रदेश के कई जनपदों में योगा कराया जा रहा है जिससे परिषदीय विद्यालयों की सकारात्मक छवि दिख रही है। इस कार्य के लिये सभी शिक्षक भाई एवं शिक्षिका बहने बधाई के पात्र हैं। योगा के द्वारा कक्षा के निष्क्रिय छात्र–छात्राएँ भी सक्रिय हो गए हैं और प्रतिदिन के योगा क्रियाकलाप में भाग ले रहे हैं। जो बच्चे विद्यालय से ड्रॉप आउट हो चुके थे विद्यालय में योगा और प्राणायाम को देखकर प्रसन्न हो कर पुनः विद्यालय लौट आये हैं और छात्रों की उपस्थिति में सुधार हुआ है।

योग के द्वारा शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है जो हमारे शरीर के लिए दवा का काम करता है और व्यक्ति की नकारात्मकता को धीरे–धीरे खत्म करता है। आज योगा के द्वारा बच्चे शारिरिक और बौद्धिक रूप से मजबूत हो रहे हैं। बच्चों में ऊर्जा का असीम भंडार होता है इस ऊर्जा को योग के द्वारा बच्चों के बहुमुखी विकास में उपयोगी सिद्ध होगा।

जिस प्रकार से मकान की नींव जितनी गहरी होती है वह मकान की सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा होता है उसी प्रकार से योग के माध्यम से बच्चों में नैतिकता के गुण को विकसित किया जा सकता है बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास से ही एक सशक्त और मजबूत भारत का निर्माण होगा। इस प्रकार योग से नौनिहालों का सर्वांगीण विकास होगा।

करें योग, रहें निरोग

अनिल कुमार शुक्ल
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय भदौसी,
विकास खण्ड–उमर्दा,
जनपद–कन्नौज।

खेल–विशेष

तैराकी

शिक्षण संवाद

तरण या तैराकी एक जलक्रीड़ा है। इसके अन्तर्गत अपने हाथ–पैर की सहायता से जल में गति करना होता है जो किसी कृत्रिम साधन के बिना किया जाता है। आप अपने अवयवों को पानी में ढीला छोड़ दीजिए और आकाश की ओर देखते हुए पानी में लेट जाइए, आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि आप डूबते नहीं हैं। पानी में स्थिर रहने का यह ढंग पहले सीखना चाहिए।

शरीर में सिर सबसे भारी अवयव है, जिससे नाक को और प्राणियों की तरह पानी के ऊपर रखकर तैरना आरंभ में कठिन होता है। तैरना मनुष्य के लिये बहुत आवश्यक है। तैरने से मनुष्य को अनेक लाभ होते हैं जैसे कि:–

(1) हम अपने या दूसरों को डूबने से बचा सकते हैं।

(2) हम अपना स्वास्थ्य अच्छा रख सकते हैं। अच्छी तरह तैरने से आत्मविश्वास बढ़ता है।

(3) यदि आप अच्छा खेले तो खेलों में भी भाग ले सकते हैं। जैसे–वाटर पोलो, ओपन वाटर स्विमिंग, तैरना (फ्रीस्टाइल, बैकस्ट्रोक, बटरफ्लाई, ब्रेस्टस्ट्रोक) इत्यादि।

तैरने के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

छाती के बल तैरना

इसमें तैरने वाला छाती के बल पानी पर लेटकर निम्नलिखित क्रिया करता है।

1. दोनों हाथ और पैर ढीले रखकर बदन के नीचे मोड़ना।

2. दोनों हाथों को मिलाकर सामने सीधे करना और साथ साथ दोनों पैर भी घुटने के नीचे हिलाकर सीधे करना।

3. सीधे पैर कैंची की तरह जोर से इकट्ठा करना। इससे पानी जोर से पीछे कटेगा और बदन आगे जाएगा।

4. दोनों हाथों से पानी को कंधों की तरफ जोर से दबाना। इससे मुँह पानी के ऊपर आएगा और श्वास लेना आसान होगा। क्रिया 1, 2, 3 में पानी में सिर डुबाकर नाक से साँस छोड़ी जाती है और इसमें पानी से सिर ऊपर निकालकर मुँह से साँस ली जाती है।

पीठ के बल तैरना

(1) दोनों हाथ मोड़कर कंधे की तरफ लेना और दोनों पैर ढीले रखकर नजदीक लेना।

(2) पानी में सिर के ऊपर हाथ सीधे करना और साथ ही साथ घुटने के नीचे पैर हिलाकर सीधे करना।

(3) कैंची की तरह पैर इकट्ठा करके दोनों हाथ वर्तुलाकार पानी में हिलाकर बदन के नजदीक पानी को दबाते दबाते लाना।

(4) इसी स्थिति में बदन को ढीला रखकर आगे बढ़ना।

बैक क्रॉल – इसमें हाथ की क्रिया दो प्रकार से होती है।

(1) दोनों हाथों को बदन के समीप लाते हुए ढीले रखकर मोड़ना और पानी के बाहर निकालते हुए सिर के पीछे पानी में सीधे रखना और पानी को दबाते दबाते दोनों हाथों को बदन के नजदीक जोर से लेना।

(2) उपर्युक्त क्रिया को क्रमशः एक के बाद दूसरे हाथ से लगातार करना। पैर की क्रिया – दोनों पैर सीधे रखकर घुटने के नीचे और ऊपर हिलाना।

क्रॉल या फ्री स्टाइल –

इसमे हाथ की क्रिया उसी तरह होती है जैसे ऊपर दूसरे प्रकार में लिखा है। एक के बाद दूसरा हाथ सिर के सामने रखकर पानी नीचे और पीछे दबाना। पानी में हाथ ढीला रखकर बाहर मोड़ते हुए निकालना। पैर को छह बार ऊपर नीचे हिलाना। नीचे हिलाने के समय और ढीला छोड़ना और ऊपर जोर से लेना। जब दोनों हाथ बाहर निकालते हैं, तब सिर को दाएँ या बाएँ मोड़कर मुँह से श्वांस लेते हैं। पानी में मुँह डूबा रहने पर नाक से श्वांस छोड़ते हैं।

स्विमिंग करने के काफी फायदे होते है, स्विमिंग सबसे अच्छी एक्सरसाइज मानी जाती है इसको करने से आपके शरीर की पूरी तरह से कसरत हो जाती है। स्विमिंग एक कम्पलीट एक्सरसाइज है, स्विमिंग करने से काफी फायदे हैं। इससे बॉडी ज्यादा एक्टिव और फ्लेक्सिबल रहती है जिम के मुकाबले स्विमिंग करने वाले ज्यादा फिट रहते है। माना जाता है कि लगभग १५ गुना ज्यादा मेहनत स्विमिंग में लगती है। स्विमिंग करने वालो को कम बीमारियाँ होती हैं, स्विमिंग करने वालो का ब्लड सर्कुलेशन भी आम आदमियों के मुकाबले ज्यादा अच्छे से होता है, स्विमिंग करने वालों की काम करने की क्षमता बढ़ जाती है। स्विमिंग से पूरे शरीर की एक्सरसाइज हो जाती है, स्विमिंग करके सिर्फ ३० मिनट में लगभग ४४० कैलोरी कम की जा सकती है।

स्विमिंग के फायदे :–

- दिमाग एक्टिव रहता है
- ☞ ब्लड सर्कुलेशन अच्छा रहता है
- ☞ कोलेस्ट्रोल नार्मल रहता है
- ☞ कम करने की क्षमता बढती है
- ☞ जोड़ों के रोग नहीं होते
- ☞ मोटापा कम करने में मदद
- ☞ इम्युनिटी पॉवर बढ़ती है।

☞ नियमित रूप से स्विमिंग करने से आपको अलग से कोई दूसरी एक्सरसाइज नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि जमीन की बजाय पानी में शरीर को १२ गुना ज्यादा मेहनत करनी पडती है। स्विमिंग से सिर्फ आप फिट ही नहीं रहेंगे बल्कि आपके लिए एक नई opportunity भी खुल जाएगी। इंडिया की इंटरनेशनल तैराक माना पटेल को डॉक्टर ने स्विमिंग करने की सलाह दी ताकि माना की लंग्स कैपेसिटी बढ़े लेकिन माना की लंग्स कैपेसिटी बढने के साथ–साथ आज देश की पहचान भी स्विमिंग में बढ़ रही है, स्विमिंग को एक डेली रूटीन में शामिल करने से सिर्फ और सिर्फ फायदा है इसका कोई नेगेटिव इफेक्ट नहीं है।

वीरधवल खाड़े भारत के सबसे बेहतरीन स्विमर हैं, साल 2008 में यूथ कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड जीतकर वह पहली बार सुर्खियों में आए थे। यही नहीं वीरधवल ओलंपिक में क्वालिफाई करने वाले भारत के सबसे युवा स्विमर रह चुके हैं। इसके अलावा वह विश्व रैंकिंग में टॉप 100 व बाद में टॉप 50 में जगह बनाने वाले भारत के पहले तैराक बने थे। वीरधवल खाड़े को साल 2011 में भारत सरकार ने अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

अंजली मिश्रा,
सहायक शिक्षिका,
प्राथमिक विद्यालय टिकरा,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-**फेसबुक पेज**: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- **फेसबुक समूह**: https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-**यू-ट्यूब**: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6– व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7– ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8– वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात